कोहं कथमिदम् जातम्

ओम तत्सदात्मने नमः

मोह के कारण मनुष्य इस संसार में, जो कि असत्य है, इसमें सुख खोजने के लिए भाग रहा है। और जो सदैव एक रस है,तीनों कालों में अबाधित है,जो आनंद सिन्धु सुख रासी है,ऐसी वह वस्तु अपने पास है,उसको भुला दिया है। माया में फंस गया है। इस चक्रव्यूह को समझने की जरूरत है। इसी के लिए विद्या है।

पहले हमारे तुम्हारे पुरखा कहते थे कि विद्या से अमृत मिलता है।

'विद्ययाऽमृतमश्नुते।'

विद्या अमृत पद देती है। अमृत रूप आत्मा से मिला देती है। इस तरह विद्या का मतलब अध्यात्म विद्या से था। विद्या प्राप्त करके ईश्वर को जाना जाता था। भगवान के लिए होती थी विद्या, पेट पालने के लिए नही होती थी। आज विद्या को, सरस्वती को बेचकर पेट भरते हैं लोग। विद्या तो अपने स्वरूप को जानने के लिए है। विचार करने के लिए है। वह विचार इस प्रकार का है कि –

कोऽहं कथमिदं जातं को वै कर्ताऽस्य विद्यते।

उपादानं किमस्तीह विचारः सोऽयमीदृशः।।

मै कौन हूँ? यह संसार कैसे है, क्यों है? हम संसार में क्यों आए, मनुष्य को यह विचार करना चाहिए। क्या हम भेंड हैं, बकरा हैं या गधा घोडा हैं? विषय करना, खाना सोना तो वह भी जानते हैं। यह मनुष्य की तो विज्ञ योनि है। सर्वश्रेष्ठ योनि है। मनुष्य क्या नहीं समझता, क्या नहीं कर सकता? इसने तो सबको कंट्रोल कर लिया है। ब्रह्मा ने जब इस शरीर को बनाया तो परमात्मा इतने खुश हुए कि इसे अपना निवास बना लिया। बोले कि यह मेरा मकान है। तो यह आत्मा इसमें रहती है। आत्मा जो तीनों कालों में एक रस है व्यापक, शुद्ध, बुद्ध, अजन्मा, अरूप, अविनाशी है। जो सबसे आगे है पीछे है। सबमें है सबसे अलग है। ऐसा जो अनिर्वचनीय तत्व है वह उसके अन्दर है। उसको पाना है। तो वहां चलना है उसके पास, न कि यहां बैठना है खाने को, विषय को ताके हुए।

इस जीवन की प्राइमरी का क ख ग अब नहीं पढ़ना है, पढ़ चुके इसे। यह ए बी सी डी पढ़ते रहने के भरोसे काम नहीं चलेगा। एम ए और पी एच डी की पढ़ाई करना है। हम कौन हैं, किसलिए पैदा हुए, क्या करना है? इस विषय को लेना है। क्योंकि,

यहि तन कर फल विषय न भाई।

स्वर्गउ स्वल्प अन्त दुखदाई।।

तो हमें जो यह मौका मिला है इसका लाभ लेना है। तुम लोग घबड़ाओ नहीं। यदि दिक्कतें आ जायें तो चिंता मत करो। तुम्हारे पास जो औकात पड़ी है वह सब संभाल लेगी। यह जो बीमारी आती है, दुखीपन आता है, गरीबी आती है, यह परेशानी आती है, यह भगवान अच्छे के लिए देते हैं। मेरे विचार से भगवान जिसका सुधार करना चाहते हैं, उसी के ऊपर दुख आता है। जब दुख आता है, तभी ईश्वर याद आता है। फिर ईश्वर की कृपा होती है, फिर हम अच्छे बन जाते हैं। यही क्रम चलता है। यही नियम है। अमीरी गरीबी से लड़ रही है, और गरीबी अमीरी से लड़ रही है। दुख, सुख से लड़ रहा है और सुख, दुख से लड़ रहा है। यह दुनिया का द्वंद्व है। इसी से यह दुनिया बनी है। यह चलेगा, हमेशा चलता रहेगा।

आप लोगों को हम यह बताना चाहते हैं कि तुम आत्मा हो। आत्मा को न दुख में दुख है, न सुख में सुख है। तुम ऐसी निर्लेप अलौकिक चीज हो। अपने को चीन्हो–पहिचानो, फिर परमात्मा दिखाई पड़ेगा। वह आपसे बोलता भी है, बताता भी है सब कुछ। और हम अनभिज्ञ हैं, जानते नहीं कि कैसे बताता है। कभी कभी तुम्हारे दाहिने अंग फड़कते होंगे, कभी बाएं अंग फड़कते होंगे। हमारे समाज में जानकारी है कि दाहिना अंग फड़क रहा है, शायद कोई लाभ होने वाला है। बायां अंग फड़कता है तो कहते हैं कि कोई हानि आने वाली है। तो यह कौन सिंगनल दे रहा है, कौन इशारा कर रहा है? यह कोई अन्दर बैठे बैठे कर रहा है। वही चीज है,उसी को पकड़ लेना है। और पकड़कर पता लगा लेना है कि हमारे अन्दर यह अलौकिक कार्य कौन कर रहा है। वह त्रिकालदर्शी (आत्मा) पहले से ही हमें इशारा दे रहा है। वह विचार इस प्रकार के हैं, इनको लाना पडेगा। तब हम राइज हो सकते हैं, उठ सकते हैं, आगे बढ़ सकते हैं।

हाँ थोडी दिक्कत है, न समझ में आने से। इसमें तुम्हारा दोष नहीं है, सबके साथ ऐसा होता है। इतनी बुरी हैविट बन जाती है। झूठे संसार को सही मान रहे हैं। परंपरागत संस्कार ऐसे बन गये हैं। जैसे स्वप्न में दिखाई पड़ा कि सर्प आया, काट लिया और हम रो रहे हैं। आंसू आगये। जागे तो आंसू बह रहे हैं। फिर जागने पर क्या सर्प या सर्प का भय रह जायेगा? ऐसी ही यह दुनिया है। यह जाग्रत अवस्था है, यह दीर्घ काल तक रहती है। स्वप्न अवस्था थोड़ी देर के लिए रहती है। हैं दोनो एक जैसी। तो घबड़ाना नही चाहिए, कोई रूप बदलेगा तब सब ठीक हो जायेगा।

अगर छटपटाओगे तो क्या होगा? जैसे किसान रोड के किनारे खेती करते हैं। अपने बैलो को वहां बाध देते हैं। कुछ पुराने बैल होते हैं, कुछ नये नटवा भी बांध लेते हैं। तो जब बड़े-बड़े ट्रक निकलते हैं सडक पर भारी आवाज करके चलते हैं, तो पुराने बैल तो मूड़ी नहीं हिलायेंगे और ज्यों के त्यों बधें रहते हैं। क्योंकि जानते हैं कि ये रोज निकलते हैं, हमारा क्या बिगाड़ लेंगे और जो नटवा होते हैं वे ट्रक की आवाज से बिदकेंगे, कूदेंगे, तडफडायेंगे और गिर पडेंगे फंस जायेंगे। न सुलझाये सुलझते हैं, न खूटा उखड़ता है। तो ऐसी हालत न करो। बस दबे दबाये पड़े रहो। फिर धीरे धीरे ठीक हो जायेगा। एक से एक भोले भाले और कमजोर साधक यहां से ठीक होकर निकले हैं।

कैसी भी स्थिति हो, सबमें खुश रहता है महात्मा। यह नियम है, यह सही तरीका है। तो इसमें बाहरी बातों का, पढ़ाई लिखाई का बहुत मतलब नहीं है।

बाहर से यहां कुछ मतलब ही नहीं है। अन्दर ही अन्दर उसमें फिक्स हो जाय। इसका नाम बोध है, ज्ञान है। इसी की एडजेस्टिंग करनी है। फिर शरीर चाहे जैसे लुढ़ककर मर जाय। अच्छे से रहे चाहे बुरे से रहे। मोटा हो जाय, दुबला हो जाय इससे कौन मतलब है? इसमें हमे कौन चिंता है? यह तो एक दिन जाने वाली चीज है। हमारी तो है नहीं, किसी की नहीं है।

इसलिए जरूरत इस बात की है कि हम लोग इसे समझें और करें। हम कौन हैं, हमें क्या करना चाहिए, हम क्यों इस दुनिया में आये हैं, ईश्वर क्या है, संसार क्या है? बस इतने में सुनें गुनें, तो कोई मिल जायेगा गाइड बताने वाला। हम शुरू ही नहीं करते। हम खोज ही नहीं करते। हम मिलने की रूचि ही नहीं करते। हम तो रंजित हो गये हैं, कि जितना है उतने में ही मजा है। संसार की झझटों में भी मजा है। इस पर एक कहानी आती है पुराण में।

कोई एक बहुत बड़े सेठ थे। गाँव के रहने वाले थे, बिड़ला जैसे। फिर वह पहुँच गये कलकत्ता बम्बई जैसे बड़े-बड़े शहरों में। तो हजारों कारखाने हो गये। फिर कभी गांव की याद आयी, तो गांव आये। वहां पुराने ऋण पड़े थे देहातियों के ऊपर। ब्योहर थे पुराने। गरीबों को कर्ज देते थे, खाने को देते थे। पैसे वाले थे। तो उसने सोचा आज मौका मिल गया है, चलें थोडा तगादा कर आयें दो चार गांवो में। तो चल पड़े। अषाढ का महीना था। गांव से एक दो किलोमीटर दूर पहुंचे, वहां कुछ जंगल जैसा ऐरिया था। तो एकाएक आंधी पानी आ गया। काली आंधी आ गयी और ओले पड़ने लगे। सेठ घबरा गया कि अब कहां छिपें। पत्थर सिर पर गिर जांय तो

मर जायं। एक वट का पेड़ था वहीं, तो दौड़कर उसके नीचे पहुंचे। पेड़ के नीचे एक कुंआ था। दिखाई नहीं पड़ा। यद्यपि दिन ही था लेकिन काली आंधी में कुछ समझ में नहीं आया और सेठ कुएं मे गिर गया। कुएं में पानी नहीं था, बालू वगैरह पड़ी थी पेंदी में तो बच गया।

बच गया तो इधर उधर टटोलने लगा। अंधेरा था। उसमें दो रस्सी पड़ी थीं। वट की डाल से बंधी हुई कुएं में लटकी थीं। उन्हीं को पा गया। देखा कि मजबूत हैं तो पैर लगा लगाकर पत्थरों की जुडाई में ऊपर चढने लगा। आधी दूर तक चढा, फिर संधि नहीं मिली और इतने में थक गया। तो वहीं बीच में किसी ढंग से खड़ा हो गया। बहुत परेशान हो गया अब अंधेरा होने लगा, शाम हो गयी। आधा वजन हाथ के सहारे रस्सी में टंगा था और आधा वजन पैरों पर था। तो कभी पैर दुख रहा था कभी हाथ दुख रहा था। हाथ कटे जा रहे हैं। ऊपर चढ़ नही सकता। नीचे जाता है तो भय लग रहा है कि कहीं साप वगैरह न काट लें। ऐसी कंडीशन में टंग गया। जहां वह टंगा था उसके ठीक ऊपर वट की डाल में एक मधुमक्खी का छत्ता था। उसमें शहद था, जो कभी एक बूंद टपक जाता था। जो कभी सेठ के मुंह मे पड़ जाता तो मीठा लगता था। जब मीठे का स्वाद मिलता तो उसे अच्छा लगता। तो वह जो नीचे जा नहीं सकता,पैर रुक नहीं पा रहे, हाथ कटे जा रहे हैं, ऐसी तकलीफ में है। फिर भी थोडी शहद मिलती तो वह तकलीफ भूल जाता था।

फिर धीरे धीरे किसी तरह से सबेरा हुआ, तो रही सही ताकत लगाकर ऊपर चढ़ने लगा। देखा कि कुंए के ऊपर बाघ खड़ा है। सेठ की मूड़ी देखा तो बाघ हाँऊं करके झपटा। सेठ खिसककर फिर वहीं पहुंच गया। नीचे देखा कि एक बहुत बडा अजगर जीभ लपलपा रहा है। अब अगर नीचे जाता हैं तोअजगर के मुंह में,और अगर ऊपर जाता है तो बाघ के मुंह में। हिम्मत खड़े रहने की है नहीं। न पैरों में क्षमता रह गयी है न हाथों में। न शरीर में क्षमता रह गयी है। रस्सी में टंगा है। जब काफी उजाला हो गया तो देखा कि एक काला और एक सफेद दो चूहे आये, और वट के पेड़ में चढ़कर उन रस्सियों को काटने लगे, जिनके सहारे वह लटक रहा था। अब उसके प्राण सूख गये। सोचा कि अब तो गये। इतने पर भी जब उसे शहद मिलता तो थोड़ा संतोष हो जाता, अच्छा लगता।

तो यह हालत मनीषियों ने मानव की बतायी है। जो संसार में रहने वाला आदमी है, उसकी कंडीशन यह है। न वहां कोई चूहा था न सेठ था। हम ही सब लोग हैं। सेठ इस जीव को कहते हैं। शरीर जब से प्राप्त हुआ इसने धन्धा बढ़ा

लिया। कर्म जंजाल में फँस गया। इड़ा पिगला ये दो श्वांसा रूपी रस्सी हैं। यह जीवात्मा उन्हीं के सहारे टंगा हुआ है। और माया का जो विषय रस है, उस शहद में पगा हुआ है। कि अब हमें कोई कमी नहीं है। ठीक है, चलेगा। दिक्कत तो है ही लेकिन चलेगा। इसी में संतोष है, और परेशानी असहनीय है। संसार का भय लगा हुआ है हर आदमी को। कल क्या होगा, मैं रह जाता हूँ कि नहीं, कोई बीमारी घेर ले, कोई एक्सीडेन्ट हो जाय, कोई दिक्कत आ जाय। क्या ठिकाना कब क्या हो जाय। दिन रात मन सोचता रहता है, यही बाघ है। संसार का भयरूपी बाघ खाये लेता है।

इन्द्रियां विषय में दौड़ रही हैं। जीभ रस चाहती है, कि हमें यह मिले, वह मिले। कभी संतोष होता नहीं। रोज नयी नयी चीज खाते हैं, लेकिन रोज नयी नयी चीज की कल्पना करते हैं। तो यह जो इन्द्रियों की कल्पनाएं हैं वह अजगर है, वह नीचे से देख रहा है। इन्द्रियों के विषय हमें खींच रहे हैं। यह शरीर अन्दर से पोला है, यह कुआं है। इसमें यह जीवात्मा सेठ है, वह टंगा हुआ है। भगवान का अंश है। जो थोड़ी सी इच्छा पूर्ति हो जाती है, वह मधुरस इसको टांगे है। दिन सफेद चूहा है और रात काला चूहा। यह दोनों जो श्वांसा रूपी रस्सी है जिसके सहारे वह टंगा है ये चूहे उसको काटने लगे। जितने दिन रात निकलते जाते हैं, उतनी श्वांसा या उम्र कम होती जाती है। तो अब तो गिरना निश्चित ही है। इस प्रकार से मानव की हालत है, लेकिन वह इस दुनिया को छोड़ना नहीं चाहता। इसमें आसक्ति हो गयी है। जीव विषय रस में पगा है,भगवान के लिए गुंजाइश ही नहीं रही।

पंडित लोग कथा बताते हैं कि भगवान विष्णु बैकुंठ में बैठे थे। नारद घूमते घूमते वीणा बजाते पहुंच गये। पूछा कि भगवान आप उदास क्यों हैं? भगवान बोले, नारद! हमसे कोई मिलने नहीं आता। हम चाहते है कि कोई आये तो उससे कुछ बात करें। बैठे बैठे अकेले हम बोर हो गये। यहां सब प्रकार का आनंद है, लेकिन यहां कोई आदमी नहीं मिलता, कि कुछ हँस बोल लें। नारद बोले, कि महाराज यह आप क्या कह रहे हैं? आपके लिए लोग जान दिये पड़े हैं, सब आ जायेंगे। बैकुण्ठ में भला कौन नहीं आना चाहेगा? विष्णु बोले कि भाई किसी को तो ले आओ। तो नारद आये पृथ्वी पर और किसी बूढ़े से कहा, क्या चलोगे बैकुण्ठ? उसने कहा,नारद जी! बैकुण्ठ तो जाना था लेकिन लड़के की शादी करना था। कुछ दिनों में लड़के की शादी हो गयी। नारद जी गये, कहा चलिये अब। बूढ़ा बोला कि नाती का मुंह देख लेते तो चलते। मतलब यह कि कोई जाना नहीं चाहता। इतना रच पच गया है आदमी इस झूठी चीज में। इन प्लास्टिक के फूलों में, इस सीपी की चांदी में, इस मरूभूमि के जल में। इस रस्सी के सर्प में ऐसा भ्रम हो गया है कि यह सही है। लेकिन यह

सही है नहीं। इस नकल को कैसे छोड़ाजाय? तो जब असल मिले तब यह नकल छूटेगा।

इसलिए इसमें सीधा सा अर्थ है कि धीरे धीरे सत्य जो परमात्मा है उसको पकड़ें। रोज हम जिद करके अभ्यास करें। अपने मन को उधर मोड़ें। अपना इष्ट निश्चय कर लें, उसको बरबस हृदय में लाकर बैठाए। इस हृदयरूपी कुर्सी में दुर्गुण बैठ गये हैं, तो उनको हटाएं और भगवान को बैठाएं। दुर्गुणों का त्याग करें। और यह करने में कोई बहुत दिक्कत नहीं है। सरल से सरल है। सब कुछ करो, हम किसी चीज का खण्डन नहीं करते। घर में रहो, काम करो, सर्विस करो बच्चों को पढाओ लिखाओ ये सब काम करो। इससे जीवन चलेगा। लेकिन हम यह खण्डन करते हैं कि इसी में न पड़े रह जाओ। प्राईमरी में लडका एडमीशन ले और पढाई करे लेकिन बीस वर्षों तक प्राईमरी में ही न पड़ा रहे। वह कोर्स कर ले और निकल जाय आगे। लेकिन दुख इस बात का है कि वह जिन्दगी भर प्राईमरी में ही पड़ा रह जाता है। यह भी कोई तरीका है? वह तो घर गृहस्थी तीर्थ व्रत आदि का कोर्स जो था वह हो गया। अब हम दूसरों को चार्ज दें, हम इसके आगे का काम देखें। हमारे समाज में पहले जीवन के चार हिस्से थे– ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, बानप्रस्थ, संन्यास। इसमें करीब तीन हिस्सा घर गृहस्थी से अलग था जीवन का। इसका असर यह था कि लोग सजातीय विचार को लेकर चलते थे। समाज भी अच्छा था। त्याग की भावना थी सबमें। ईश्वरीय भावना थी। कितनी सुन्दर पद्धति थी। तो अब उतना नहीं, तो कम से कम चौथेपन में तो छोड़ो इसे। लिखा है कि

'चौथे पन जाइय नृप कानन।'

यहां केवल राजा के लिए आदेश नहीं है। राजा सब हैं। राजा उसे कहते हैं, जिसके पास राज्य हो। राज्य माने प्रापर्टी। लैण्ड की, पैसे की और किसी भी किस्म की। तो मेरे विचार से सब राजा हैं। राजा से कोई कम है क्या? यह मनुष्य का शरीर और इसके अन्दर इन्द्रियां, मन, बुद्धि यह कोई मामूली प्रापर्टी नहीं है, जो भगवान ने दे दिया है। तो सब राजा ही हैं। इसलिए हर आदमी को चाहिए कि जब रिटायर्ड हो जाय, जब पचास या साठ साल की उम्र हो जाय तो घर का चार्ज अपने बच्चों को दे दे, और खुद निकल जाय। निकलने का मतलब घर के जंजाल से अलग हो जायं। अनासक्त हो जायं।

अब इसमें आप हमसे एक प्रश्न यही करेगें कि क्या करें महाराज मन ही नहीं छोडता। मन मानता ही नहीं। मन हटता ही नहीं। मन उन चीजों में फंसा है और

उसीमें उलझा रहना चाहता है। तो इसका इलाज है कि हम सब भगवान को सौंप दे। ईश्वर का भरोसा करें और खुद अनासक्त हो जायं। जो भी करें उसमें आसक्ति न रहे, ईश्वर का मानकर करें। हम दिन भर जो कुछ भी करें, उसको शाम के समय भगवान को समर्पित कर दें। कहें कि भगवान मैने कुछ नहीं किया। मैं तो आपके हांथ की कठपुतली हूं। आप जैसा धागा हिलाते गये, मैं कठपुतली की तरह नाचता गया। यह जो कुछ किया है आपने किया है। मैं तो आपके हाथ का उपकरण मात्र हूं। तो इस तरह जो कुछ क्रिया होगी, भगवान को समर्पित हो गयी तो भक्ति बन गयी। अनासक्त कर्म ही भक्ति है। और यदि यह हो कि मैने किया, यह पैसा, यह मकान यह सब मेरा है तो यह गड़बड़ है। यह आसक्ति का लक्षण है।

इस तरीके से यह कुछ ऐसी बातें हैं, जिनकी हमें रोज जरूरत है सुनने की और करने की। घंटेआधा घंटे रोज जरूरत है। फिर कोई दिक्कत नहीं है। दो चार महीने में पैट बदल जायेगा। तो हमारी गाड़ी माया की लाइन से हटकर भगवान की लाइन में चली जायगी। पैट बदल जाय, तब इसको कहते हैं सतसंग। सत कहते हैं जो तीनों कालों में अबाधित एक रस वस्तु है आत्मा। उसी में हमारा मन लगे। उसी सत का साथ करे, उसका नाम सतसंग है। इसकी रीति नीति बताने वाले ही बतायेगें। जिन्होंने प्रैक्टिकल किया है। अगर सही गाइड मिल गया तो फिर कोई ऐसी बात नहीं है जो मनुष्य से न हो। सब हो सकता है, लेकिन परेशानी यह है कि लोग अपने स्वभाव से बन्धित हो गये हैं। और मान लिये हैं कि इतना ही हमारा घोसला है। इतने के लिए हमें जीना मरना है। ऐसे ही रहना है। लेकिन यह सही है नहीं। हमारा तो स्वरूप अभी इनलार्ज होगा। तो कुछ करना है उसके लिए। अब ये मन कहता है कि मैं भाग रहा हूँ, आओ मेरे पीछे मुझे पकड़ो। वह हमको चिढ़ा रहा है, चैलेंज दे रहा है चलो हमको पकड़ो। हम उसे पकड़ते नहीं, रोकते टोकते नहीं इसलिए वह भागता है। जब हम रोज उसके पीछे पड़ेंगे तो फिर कुछ दिन में भागेगा नहीं। वह ýकेगा और बहुत बड़ी ताकत बन जायेगा।

'मनै ज्ञान है मनै ध्यान है मन है पारख वानी।'

मतलब यह मन ही सब बनता है। यह बहुरूपिया है। यह सही भी बन जायगा, गलत भी बन जायेगा। सही कब बनता है, जब मन निर्विषय होता है। जब हम शुद्ध हो जाते हैं, तो परमात्मा आ जाता है। यह मन गरूड़ बन जाता है। तब इसमें विष्णु बैठ जायगा। और अभी जब रावण बैठा है तो यह बेईमानी करेगा। बदमाशी करेगा।

भोगों में रूचि लेगा। बनावटी दुनिया का मालिक बनेगा। ऐसा यह पूरा चार्ट समझना पड़ेगा।

तो पहली बात है कि यह पहेली कैसे सुलझे कि संसार असत्य है और सत्य की तरह हमें दिखता है। इसी को क्लियर करने के लिए सतसंग किया जाता है, गुरु किया जाता है, शास्त्र सुना जाता है। संसार की रचना कैसे हुई, कैसे उसका विस्तार हुआ, कैसे उसको क्लोज करते हैं समेट लेते हैं। यह समझना है। पहले यह शून्य था आकाशवत। उसमें शब्द आया। ओम यह पहला शब्द हुआ।

ओमित्यैकाक्षर ब्रह्म।

ओम् शब्द ब्रह्म है, ऐसा वेदों में आया है। शब्द आकाश तत्व का गुण है तन्मात्रा है। तो शब्द से आकाश बना। प्रथम ओम् से शब्द बना है, सो आकाश कहाया। फिर आकाश से वायु की तन्मात्रा स्पर्श बना और उससे वायु बना। वायु से रूप, और रूप से तेज या अग्नि उत्पन्न हुआ। अग्नि से रस और रस से जल बना। जल से गन्ध और गन्ध से पृथ्वी तत्व बना। इस तरह से ये पाँच तत्व और सत रज तम या इन्हीको ब्रह्मा, विष्णु, शंकर अथवा महत्तत्व, प्रकृति और पुरुष अथवा मन, बुद्धि अहंकार कहते हैं। इस तरह पाँच और तीन आठ तत्वों से इस संसार की रचना होती है। कोई कोई प्रकृति और पुरुष दो तत्वों में ही सबको ले लेते हैं। शास्त्रों में आया है कि पुरुष सात आवरणों से ढका हुआ है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश महत्तत्व और मूल प्रकृति। गोस्वामी जी ने इन सात आवरणों का संकेत दिया है,

सप्तावरण भेद करि, जहां लगे गति मोरि।

इस तरह से यह सृष्टि अपने से ही है। अब इसे उलटकर समेट देना है। सकलदृश्य निज उदर मेलि। तो बाहर संसार में है क्या? कहते हैं

मन तू झूठे जग में आई।
ब्रह्मा विष्णु महेश बनाकर दीन्हों जगत रचाई।
ज्यों केले के पत्र उतारत कछु नहिं सार दिखाई।
सीपी देखि दूर से चमकत रसरी देखि सर्प भ्रम जाई।
ओला पाला ओस का मोती हाथ धरे गल जाई।
कह पुरुषोत्तम बिन सद्गुरु के झूठे का सांच दिखाई।

बिना गुरु के बताये सही की प्रतीति होती नहीं, इसलिए झूठे का सही दिखाई पड़ रहा है। तो संसार में कुछ है नहीं। महात्मा लोग इसको उल्टाकर लेते हैं। उल्टा

करने से यह समेटा जा सकता है। जैसे यह कार्पेट खोलकर फैलाया गया, अब इसे समेटना है तो वैसे ही उलटकर रोल करते जाओ। इसी तरह यह जो संसार का विस्तार जहां से हुआ है,उसी में उलटकर समेट लो। मकड़ी जैसे जाला बनाती है फिर समेट लेती है। तो पृथ्वी को जल में लीन करो, जल को अग्नि में, अग्नि को वायु में, वायु को आकाश में, आकाश को महत्तत्व में, महत्तत्व को प्रकृति में और प्रकृति को आत्मा में लीन कर दो। इस तरह से इसको समेट लिया जाय, इसको उल्टा कहते हैं। वैसे तो इसमें अनेक मत हैं जो सम्प्रदाय वालों ने बना लिये हैं। और यह जो सच्चा सधुवई का रास्ता है उसके लिए तो कहते हैं कि,

'बारह साल रहै संत की टोली।

तब एक मिलै हंस की बोली।'

जब बहुत दिनों तक महात्मा का साथ कोई करेगा तब कुछ ढंग जानेगा। तब जाकर ईश्वर को समझने के लिए प्लान बनकर तैयार होगा।

यह जो स्कूलों की पढाई लिखाई है-सांइस की पढाई, भूगोल की, कृषि की, राजनीति की-यह सब व्यवस्थित कर ली गयी है। इनके सिखाने के लिए समाज में नियमित व्यवस्था है। पाठ्यक्रम बना लिये गये हैं। विषय सामग्री को लिखित कर लिया गया है। संस्थाए बन गयी हैं। इनमें नियमित पढ़ाई होती है, परीक्षा होती है, फिर डिग्रियां मिलती हैं, उनकी मान्यता है। मान्यता देने वाली संस्थाएं हैं। अध्यात्म शास्त्र की पढ़ाई की भी ऐसी एक विधि है, लेकिन समाज में उसकी कोई व्यवस्था और मान्यता उस प्रकार से नहीं है। इसके लिए कोई बोर्ड या यू जी सी नहीं बना है। इसलिए मनमानी ढंग से यह पढ़ाई अनेक विधियों से चल रही है। सही तरीका अब संप्रदायवाद के जाल में फंस गया है। यह जो हम बता रहे हैं यह है महात्माओं की शैली। संप्रदायवाद में लोग इसको दूसरे ढंग से लेते हैं। यह संसार चक्रहै। अब यह तो राउंड है, गोल है। इसलिए इसका शुरू और अंत कुछ कहा नहीं जा सकता। इसलिए उसको अनिर्वचनीय भी कह दिया जाता है। इसका निर्वचन नहीं किया जा सकता।

वास्तव में हम लोग कई आवरणों की, कई खोखों की जिंदगी जीते हैं। जैसे हमारा स्वरूप तो तुर्यातीत में है। तुर्या में आकर अनुशासन करते हैं, सुषुप्ति में आकर जीवन लेते हैं और जाग्रत में तथा स्वप्न में भोग करते हैं, ऐसा है यह। आत्मा तुर्यातीत है। कारण शरीर अनुगत चेतन का प्रतिबिम्ब तुर्या है। अब उससे एक सीढ़ी नीचे आ जाओ तो ईथर है, निर्मल आकाश है। उसको सुषुप्ति अवस्था कहते

हैं। फिर स्वप्न और जाग्रत अवस्थाएं हैं, संसार में आ गये। ऐसे यह विस्तार हो जाता है संसार का। इसके ठीक उल्टा चलना पड़ेगा, सुषुप्ति में जाना पड़ेगा, ध्यान में जाना पड़ेगा। तब तुर्या और फिर अपना स्वरूप।

किताबें पढ़ने लिखने से कोई मतलब ज्यादा नहीं होता। करने वाले को यह सब अपने से भी आ जाता है। सबसे बड़ी चीज है कि संत महापुरुषों का संग करे, उनकी वाणी सुने। जो शब्द बोलें उन्हे समझे। पूछकर समझे। यह समझने का तरीका है। करने का तरीका है कि हम जप करें, ध्यान करें। अपने ध्येय में लग जायं। जब ध्येय में एकतानता आयेगी तो चेतन का प्रतिबिम्ब पड़ जायेगा। फिर अपने से प्रकाश आ जायेगा। सब दिखाई देने लगेगा। जो अच्छे महापुरुष होते हैं वह समझते हैं। यह साधक अच्छे गुरुओं के दरबार का खेला हुआ है, संस्कारवान है, यह ठीक है। उनको अंतर्जगत से भाव मिल जायेंगे। साधक किस स्तर का है, कितनी योग्यता है, यह सब देखकर उसे गाइड कर देंगे। ऐसी शैली से यह साधना चलती है। और उसी का प्रयोग महात्मा लोग किया करते हैं। तो यह सब क्रियात्मक है, बिना किये किताब पढ़ने से समझ में नहीं आता यह विषय। और आज पढ़ने में सभ्यता इतनी आगे हो गयी है कि पढ़े लिखे आदमी ज्यादा हेा गये हैं। पहले पढ़े लिखे कम होते थे। तो जब नहीं पढ़े होते थे तो इन्हीं बातो को मोटे मोटे दो शब्दों में कह देते थे। जैसे गोरखनाथ ने कहा,

'हर भज हर भज हीरा परख ले।
समझ पकड़ नर मजबूती।।
अष्ट कमल में खेलो मेरे भ्राता।
और वार्ता सब झूठी।।'

अष्टकमल कहते हैं अनाहत को। इसमें इष्ट का ध्यान करो तो सब चीज आ जायेगी। बस एक इतनी बात कह देता है। आज कल ध्यान पर बड़ी बड़ी पुस्तकें छप गयी हैं, ध्यान के क्लास लगते हैं। यह सब ऊपरी बातें हैं, जो आजकल मेडिटेशन के नाम पर सिखाते हैं। अनाहत के ध्यान से वह सब अपने आप आ जाती हैं। यह उसमें गुण है। जब वह योग्यता हम ले लेंगे तो सब आ जायेगा। इसलिए नियम से बैठा करो। अपने साधन में लगे रहो और कोई भी बात हो जो क्लीयर न हो, कोई दिक्कत आये तो फिर बताओ। और संसार में रहते हुए ऐसे निर्लेप रहो जैसे कमल का पत्ता रहता है पानी में। किसी में आसक्ति न हो, बस यही मूल मंत्र है। हर गुरु चाहता है कि हमारा जो शिष्य है हमारा जोसाधक है। हमारा जो लड़का है

हमसे अच्छा हो जाय। यह अच्छे गुरु का लक्षण है। कैसे अच्छा बने? डाँटने से बनेगा कि पुचकारने से बनेगा। प्यार से बनेगा। कि कुछन बोले उसके अंदर प्रवेश करके इनर्जी दे दी जाय तब बनेगा। अब यह तो उसकी माँग के ऊपर है। कैसे भी बने–वैसे उसका इलाज करना चाहिये । तब वह ठीक रहता है।

हरिः ओम